वैदिक विज्ञान की ओर.....

2

इस्लाम ने लगभग 700 वर्ष इस देश पर राज किया। लाखों हिन्दुओं का खून बहाया, हजारों मन्दिर तोड़े, चोटी व जनेऊ तोड़कर मुस्लिम बनाया परन्तु सब हिन्दुओं को वे इस्लामियत का दास नहीं बना सके। इसका कारण था कि वे हमें इस्लामी शिक्षा का भक्त नहीं बना पाये, भले ही उर्दू, फारसी भाषाएं हमने सीखीं। इधर अंग्रेजों ने केवल 200 वर्ष शासन किया परन्तु उन्होंने प्रत्येक भारतीय अथवा हिन्दू को अंग्रेजियत का पूर्णतः दास बना दिया। इसका कारण यह था कि अंग्रेजों ने हिन्दुओं को अपनी शिक्षा का पूर्णतः दास बना लिया और हमारी भारतीय शिक्षा नष्ट कर दी। उन्होंने हमें यह भी विश्वास दिला दिया कि अंग्रेज विश्व में सबसे सभ्य, शिक्षित एवं वैज्ञानिक प्रतिभासम्पन्न हैं, उन्होंने अपनी टैक्नोलहजी व विज्ञान के सहारे हमें यह मानने को विवश कर दिया कि भारत विज्ञान व तकनीक के क्षेत्र में सदा से मूर्ख ही रहा है। इस विश्वास में आकर भारत के शिक्षित व अशिक्षित सभी व्यक्ति बौद्धिक रूप से उनके दास बन गये। आज भी देश के कथित प्रबुद्ध यही मानते हुए प्राचीन भारतीय इतिहास, वेद, देवों, ऋषियों व अन्य पूर्वज महापुरुषों की निन्दा करते हैं।

ऐसे कथित प्रगतिशील, प्रबुद्ध वा वामपंथी, जो टी.वी. चौनलों पर बैठकर अपने ही देश को जोश में भर कर गाली देते हैं, को बड़ी विनम्रता के साथ अपना प्रिय बन्धु मानकर बताना चाहता हूँ कि मेरा ग्रन्थ 'वेदविज्ञान-आलोक' जो तीन-चार महीने में बिक्री के लिये उपलब्ध हो जाएगा, न केवल आपके इस भ्रम को तोड़ने अपितु विश्व में विकसित देशों के प्रबुद्धों के साथ-2 शीर्ष वैज्ञानिकों को भी वेदों, देवों व ऋषि मुनियों के महान् ज्ञान-विज्ञान के सम्मुख नतमस्तक होने के लिए प्रेरित करेगा। तब अराष्ट्रीय, जातिवादी, साम्प्रदायिक व भाषावादी नेताओं के विषवमन तथा कथित हिन्दुओं के अन्दर से सामाजिक भेदभाव, जो अभी तक दूर नहीं हो पाया है, पर नियन्त्रण करने में सहयोग मिलेगा। इन जोशीले वक्ताओं तथा इनके साथ संवाद करने वाले राष्ट्रवादी विचारधारा के प्रचारक, दोनों को ही गम्भीर अध्ययन व चिन्तन करके यथार्थ को जानना होगा। मैं इस कार्य में न केवल सभी भारतीय भाई-बहिनों का अपितु मानवता व सच्चे विज्ञान से प्रेम करने वाले मानवमात्र का सहयोग-सहकार चाहता हूँ।

क्रमशः.....

– आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक